B.M. COLLEGE, RAHIKA
MADHUBANI

L.N.M.U DARBHANGA

Dr. ADITI BHARTI

Assistant Professor

(Guest Faulty)

Department of Sociology

Scanned with CamScanner

सामाजिक समूह
(Social Group)

Man is a social animal, no man can live in isolation.

मनुष्य का जीवन वास्तव में सामूहिक जीवन है | मनुष्य को सामाजिक प्राणी कहने का तात्पर्य भी यही है कि वह समूह में रहता है | प्रत्येक व्यक्ति का जन्म समूह में ही होता है एवं समूह के माध्यम से ही वह अपनी आवश्यकता की पूर्ति एवं पूर्ति करने के तरीके को सीखता है|

DEFINITION:

सामाजिक समूह (Social Group) : किसी भी दो या दो से अधिक व्यक्तियों के ऐसे समूह को कहते हैं जो एक-दूसरे से सम्पर्क व लेनदेन रखें, जिनमें एक-दूसरे से कुछ सामानताएँ हों और जो आपस में एकता की भावना रखें |

Social groups and differentiate between several different types primary, secondary, and reference groups.

प्राथमिक समूह (Primary group) :

प्राथमिक समूह एक छोटा सामाजिक समूह है जिसके सदस्य व्यक्तिगत एवं करीबी संबंध में बँधे रहते हैं , जैसे परिवार ,बचपन के मित्र आदि|

सर्वप्रथम सी. एच. कूले (C. H. Cooley) ने अपनी पुस्तक सोशल ऑर्गनाइजेशन (Social Organisation)में प्राथमिक समूह शब्द का प्रयोग किया जिसे वे प्राथमिक संबंधों के आधार पर व्याख्यायित करते हैं | कूले के अनुसार प्राथमिक संबंध वे संबंध हैं जिसमें आमने सामने का सहयोग एवं घनिष्ठता हो|प्राथमिक संबंधों के आधार पर जो समूह विकसित होता है उसे कूले प्राथमिक समूह कहते हैं |

Scanned with CamScanner

प्राथमिक समूह की विशेषताएं :-

1. आमने-सामने के संबंध |
2. हम की भावना का होना |
3. समूह के आकार का छोटा होना |

द्वितीयक समूह (Secondary group):

द्वितीयक समूह भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति , कम घनिष्ठता तथा औपचारिकता को व्यक्त करता है | द्वितीयक समूह में हम सहयोग प्राप्त करते हुए भी सहयोगी की पहचान से अपरिचित रह सकते हैं इसलिए द्वितीयक समूह का आकार वृहद् ही नहीं अनिश्चित भी होता है , जैसे मैगजीन या ब्लॉग पढ़ने वाले को हो सकता है लेखक न जानता हो |

द्वितीयक समूह की विशेषताएँ:-

1. समूह के आकार का बड़ा होना |
2. निश्चित उद्देश्य का होना |
3. सदस्यों में औपचारिक तथा अप्रत्यक्ष संबंध का होना |

अंत: समूह एवं वाह्य समूह (In-group and out-group):

अंतः समूह:वह समूह है जिसमें व्यक्ति अपनी पहचान सुनिश्चित करता है | अंतः समूह के लोगों में अपने सदस्यों के प्रति लगाव ,सहानुभूति एवं प्रेम रहता है साथ ही लोगों में नृजातिकेंद्रवाद की भावना भी रहती है |अंतः समूह में घनिष्ठता ही नहीं पाई जाती बल्कि वाह्य समूह के प्रति घृणा या गैर-मैत्रीपूर्ण व्यवहार भी देखने को मिलता है ,जिसकी अभिव्यक्ति सामाजिक दूरी पर आधारित व्यवहार में दिखाई पड़ता है , जैसे कोई व्यक्ति कहता है हम शहरी हैं देहाती नहीं |

Scanned with CamScanner

वाह्य समूह:

जिस समूह को व्यक्ति अपने समूह के रूप में स्वीकार नहीं करता है एवं उस समूह के प्रति कम या अधिक वैमनस्यपूर्ण या गैर-मैत्रीपूर्ण व्यवहार रखता है तब उस व्यक्ति के लिए वह समूह वाह्य समूह हो जाता है | यह सामाजिक व्यवहार में भी दिखायी देता है , जैसे हम हिंदी भाषी है अंग्रेजी भाषी नहीं |अंतः समूह एवं बाह्य समूह की सीमाएं निश्चित नहीं होती है | व्यक्ति की भावनाओं के घटने या बढ़ने से इसका आकार भी घटता बढ़ता रहता है ,जैसे स्कूल के समय जो अंतः समूह है वह कॉलेज में पहुंचते बड़ा हो जाता है एवं विश्वविद्यालय में और बड़ा हो जाता है |

संदर्भ समूह (Reference group):

संदर्भ समूह वह समूह है जिसे मानक समझकर व्यक्ति स्वयं के व्यवहार का मूल्यांकन करता है एवं मानसिक रूप से उस समूह का सदस्य बनने की इच्छा होती है ,जैसे बेरोजगार व्यक्ति द्वारा रोजगार प्राप्त व्यक्ति के समूह को संदर्भ समूह के रूप में देखना |

Scanned with CamScanner